सत्यमेव जयते

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

भारत सरकार

वैश्विक वयस्क तम्बाकू सर्वेक्षण

गेट्स इंडिया 2009-2010

कार्यकारी सारांश

(Established in 1956)
Capacity Building for a Better Future
International Institute for Population Sciences
Deonar, Mumbai - 400 088

कार्यकारी सारांश

वैश्विक वयस्क तम्बाकू सर्वेक्षण (GATS) वयस्कों में तम्बाकू के (धूम्रपान और धूम्ररहित तम्बाकू) उपयोग के आँकड़ों की तथा तम्बाकू नियंत्रण के प्रमुख संकेतको की सुव्यवस्थित मॉनिटरिंग (निरीक्षण) के लिए वैश्विक मानक है। वैश्विक वयस्क तम्बाकू सर्वेक्षण भारत के सभी 29 राज्यों और दो केन्द्रशासित प्रदेशों, चण्डीगढ और पुडुचेरी, में किया गया, जिसमें देश की कुल जनसंख्या का 99.9 प्रतिशत भाग सम्मिलित है । सर्वेक्षण के प्रमुख उद्देश्य, तम्बाकू (धूम्रपान और धूम्ररहित तम्बाकू) का प्रचलन, अप्रत्यक्षित धूम्रपान का प्रभाव, तम्बाकू छोड़ने का प्रयास, तम्बाकू के मीडिया संबंधित संदेशों का प्रभाव और तम्बाकू के उपयोग का ज्ञान, दृष्टिकोण और विचारों की दिशा को प्राप्त करना है ।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान को गेट्स कराने का कार्यभार सौंपा,तकनीकी सहायता सेंटर्स फॉर डिजीस, कंट्रोल एण्ड प्रीवेंशन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, जॉन्स हॉपकिन्स ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ और आर टी आई इंटरनेशनल ने प्रदान की ।

वैश्विक वयस्क तम्बाकू सर्वेक्षण भारत (2009-2010) एक पारिवारीक सर्वेक्षण है जिसमें 15 वर्ष या अधिक आयु के लोगों को सम्मिलित किया गया । राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय (उत्तर, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण, मध्य और पूर्वोत्तर) संकेतको को निवास तथा लिंग के आधार पर और राज्य स्तर के संकेतकों को लिंग के आधार पर प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय प्रातिनिधिक सैम्पल का उपयोग किया गया । सर्वेक्षण में तम्बाकू के उपयोग तथा अन्य तम्बाकू नियंत्रण संकेतकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक आँकडों को उपलब्ध कराने के लिए एक मानकीकृत प्रश्नावली, डेटा संग्रह और अन्य प्रबंधन प्रक्रियाओं का उपयोग किया गया ।

यह भारत का पहला राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण है जहां इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा आँकड़ों का संग्रह और प्रबंधन किया गया । गेट्स इण्डिया में कुल 69,296 साक्षात्कार किए गए जिसमें 33,767 पुरुष और 35,525 महिलाएँ थीं । कुल साक्षात्कार में से 41,825 साक्षात्कार ग्रामीण इलाकों में तथा 27,471 नगरीय इलाकों में किए गए । सम्पूर्ण प्रतिक्रिया दर 91.8 प्रतिशत थी जो कि सर्वोच्च तमिलनाडु मे (99.2%) तथा निम्न अरुणाचल प्रदेश में (80.1 %) थी ।

तम्बाकू उपयोग

गेट्स इंडिया से यह पता चलता है कि भारत में एक तिहाई से ज्यादा (35%) वयस्क किसी न किसी प्रकार से तम्बाकू का उपयोग करते है । उनमें से 21 प्रतिशत वयस्क धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करते हैं पर धूम्रपान नहीं करते, 9 प्रतिशत धूम्रपान करते हैं परंतु धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग नहीं करते और 5 प्रतिशत धूम्रपान के साथ धूम्ररहित तम्बाकू का भी उपयोग करते है । इनके आधार पर तम्बाकू का उपयोग करनेवालों की अनुमानित संख्या 274.9 मिलियन है, जिसमें 163.7 मिलियन धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करते हैं, 68.9 मिलियन धूम्रपान करते हैं और 42.3 मिलियन धूम्रपान और धूम्ररहित तम्बाकू दोनों का ही उपयोग करते हैं । तम्बाकू का प्रचलन पुरुषों में 48 प्रतिशत और

महिलाओं में 20 प्रतिशत है । पांच ग्रामीण पुरुषों में से लगभग दो (38%) और चार नगरीय पुरुषों में से एक (25%) तम्बाकू का उपयोग करते हैं । धूम्रपान का प्रचलन पुरुषों में 24 प्रतिशत जबकि महिलाओं में 3 प्रतिशत है । धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों का प्रचलन पुरुषों में (33%) महिलाओं (18%) की अपेक्षा ज्यादा है । सभी राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में तम्बाकू के प्रचलन का प्रतिशत उच्चतम 67 प्रतिशत मिजोरम में और न्यूनतम 9 प्रतिशत गोवा में है । तम्बाकू उपयोग का प्रचलन अरुणाचल प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, मणीपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओरिसा, सिक्किम, त्रिपुरा, आसाम और पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय औसत से अधिक है । अधिकांश राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में धूम्रपान तथा धूम्ररहित तम्बाकू का प्रचलन पुरुषों में महिलाओं से अधिक है,अपवाद स्वरुप पुडुचेरी,तमिलनाडु,मेघालय,त्रिपुरा और मिजोरम, है जहाँ धूम्ररहित तम्बाकू का प्रचलन महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा है। धूम्रपान करनेवाले तथा धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करनेवालों में 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग तम्बाकू का उपयोग प्रतिदिन करते हैं ।

भारत में धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों में खैनी या तम्बाकू-चूना का मिश्रण सबसे लोकप्रिय/प्रचिलित पदार्थ है (12%)। गुटखा जो तम्बाकू-चूना और सुपारी का मिश्रण है उसका सेवन 8 प्रतिशत लोग करते हैं , जबकि पान और मुखिक तम्बाकू के प्रचलन का प्रतिशत क्रमश: 6 और 5 है । मुखिक तम्बाकू के अलावा सभी धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थो का सेवन महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक है । धूम्र,तम्बाकू पदार्थो में बीड़ी (9%) सबसे ज्यादा प्रचलित है , जब की सिगरेट 6 प्रतिशत और हुक्के का उपयोग 1 प्रतिशत लोग करते है । नगरीय क्षेत्रों में सिगरेट पीनेवालों का प्रचलन पुरुष और महिला दोनों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है,जबकि अन्य धूम्र-तम्बाकू पदार्थों के उपयोग का प्रचलन ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है । धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों के उपयोग का प्रचलन नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है , जबकि गुटखे का प्रचलन नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों मे समान है ।

भारत में रोज सिगरेट पीनेवाले प्रतिदिन औसतन 6.2 सिगरेट पीते है और यह औसत बीड़ी पीने वालों में 11.6 बीड़ी है । रोज सिगरेट पीनेवालो में लगभग एक चौथाई व्यक्ति प्रतिदिन 10 से अधिक सिगरेट पीते हैं और आधे से अधिक लोग प्रतिदिन 10 से ज्यादा बीड़ी पीते हैं ।

तम्बाकू का उपयोग करनेवाले 20-34 उम्र के वयस्कों - चाहे वे धूम्रपान करनेवाले हो या धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करते हो - आरम्भ करने की औंसतन आयु लगभग 18 वर्ष है । हर पांच में से दो दैनिक तम्बाकू सेवन करनेवाले 20-34 वर्ष के व्यक्तियों ने तम्बाकू का सेवन करना 18 वर्ष के पहले ही शुरु किया । धूम्रपान छोड़ने का अनुपात, अर्थात कभी न कभी दैनिक धूम्रपान करने वालो में पूर्व दैनिक धूम्रपान करनेवाले, 13 प्रतिशत है , जब कि धूम्ररहित तम्बाकू छोड़ने का अनुपात, अर्थात कभी न कभी दैनिक धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करने वालो में पूर्व दैनिक धूम्ररहित तम्बाकू का करनेवाले, 5 प्रतिशत है । दैनिक तम्बाकू उपयोग करने वाले हर पांच में से तीन व्यक्ति प्रात: जागने के आधे घंटे के भीतर तम्बाकू का उपयोग करते हैं।

तम्बाकू छोड़ने का प्रयास

सर्वेक्षण पूर्व 12 महिनों की कालावधि में पांच में से लगभग दो धूम्रपान करनेवाले (38%) और धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करनेवालों ने (35%)तम्बाकू छोड़ने का प्रयास किया । पुरुष तथा महिला धूम्रपान करनेवालों ने समान रुप से (38% पुरुष एवं 39% महिला) धूम्रपान छोड़ने का प्रयास किया । धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करनेवालों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक महिलाओं ने तम्बाकू छोड़ने का प्रयास किया । भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में तम्बाकू छोड़ने के प्रतिशत में व्यापक अन्तर है । धूम्रपान करनेवालों में यह अन्तर दिल्ली में 12 प्रतिशत से लेकर आन्ध्र प्रदेश में 55 प्रतिशत के बीच है । धूम्ररहित तम्बाकू का प्रयोग करनेवालों में यह अन्तर दिल्ली में 8 प्रतिशत से मध्य प्रदेश में 54 प्रतिशत तक है ।

धूम्रपान छोड़ने की कोशिश करनेवालों में से 9 प्रतिशत लोगों ने परामर्श एवं 4 प्रतिशत लोगों ने फॉर्माकोथेरीपी का प्रयोग किया, जबकि 26 प्रतिशत वयस्कों ने तम्बाकू छोड़ने के उपाय जैसे पारंपरिक उपचार तथा अन्य विधियाँ अपनाई। धूम्ररहित तम्बाकू छोड़ने की कोशिश करनेवालों में से 8 प्रतिशत वयस्कों ने परामर्श एवं 22 प्रतिशत वयस्कों ने अन्य विधियाँ अपनाई। धूम्रपान करनेवालों में 47 प्रतिशत वयस्क जो पिछले 12 महीनों की कालावधि में स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ता के पास गए थे; उनमें से आधे से थोड़े अधिक लोगों को (53%) स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ता ने पूछा कि क्या वे धूम्रपान करते हैं और उनमें से 46 प्रतिशत वयस्कों को धूम्रपान छोड़ने की सलाह दी ।

धूम्ररहित तम्बाकू का प्रयोग करनेवाले 47 प्रतिशत वयस्क जो कि पिछले 12 महीनों कि कालावधि में स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ता के पास गए थे, उनमें से एक तीहाई से थोड़े अधिक (34%) वयस्क से स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ता ने पूछा कि क्या वे धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों का प्रयोग करते है और उनमें से केवल 27 प्रतिशत लोगों को तम्बाकू छोड़ने की सलाह दी ।

अप्रत्यक्षित धूम्रपान

गेट्स सर्वेक्षण के अनुसार 52 प्रतिशत वयस्क अपने घरों में अप्रत्यक्षित धूम्रपान से प्रभावित हैं । नगरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अप्रत्यक्षित धूम्रपान से प्रभावित वयस्कों का प्रतिशत क्रमश: 58 प्रतिशत और 39 प्रतिशत है । घरों में धूम्रपान का अप्रत्यक्षित प्रभाव उच्चतम मिज़ोरम में 97 प्रतिशत से लेकर न्यूनतम तमिलनाडु में 10 प्रतिशत है । चार दीवारी के अंदर कामकाज करनेवाले तथा कभी-कभी चार दीवारी के अंदर और कभी बाहर कामकाज करनेवालों में 30 प्रतिशत वयस्क अप्रत्यक्षित धूम्रपान से प्रभावित हैं। विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में ऐसे लोगों का स्तर जम्मू एवं कश्मीर में 68 प्रतिशत और चण्डीगढ में 15 प्रतिशत है । सर्वेक्षण पूर्व 30 दिनों पहले की कालावधि में जिन वयस्कों ने विभिन्न सार्वजनिक स्थलों का दौरा किया, उनमें से 29 प्रतिशत अप्रत्यक्षित धूम्रपान से प्रभावित हुए। 18 प्रतिशत सार्वजनिक वाहनों मे, 11 प्रतिशत होटलों में, 7 प्रतिशत सरकारी भवनों में तथा 5 प्रतिशत अस्पतालों में अप्रत्यक्षित धूम्रपान से प्रभावित हैं । वयस्को में सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान का अप्रत्यक्षित प्रभाव उच्चतम मेघालय में 54 प्रतिशत से लेकर न्यूनतम चण्डीगढ में 11 प्रतिशत है । जो

वयस्क सर्वेक्षण पूर्व 30 दिनों की कालावधि में होटल गए , उनमें से 51 प्रतिशत वयस्कों ने होटल में धूम्रपान निषेध क्षेत्र देखा और उनमें से 16 प्रतिशत वयस्कों ने धूम्रपान निषेध क्षेत्र में लोगों को धूम्रपान करते हुए देखा । होटल में धूम्रपान निषेध क्षेत्र देखनेवाले वयस्कों के प्रतिशत में विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों मे काफ़ी अंतर है । यह अंतर मिजोरम में 17 प्रतिशत से दिल्ली में 89 प्रतिशत तक है । इसी तरह का अंतर धूम्रपान निषेध क्षेत्र में लोगों को धूम्रपान करते हुए देखनेवालों में भी है । यह अंतर चण्डीगढ में 3 प्रतिशत से लेकर सिक्किम में 41 प्रतिशत तक है ।

आर्थिक पहलू

तम्बाकू पदार्थों का उपयोग करनेवालों में 51 प्रतिशत सिगरेट पीनेवाले, 49 प्रतिशत बीड़ी पीनेवाले और 55 प्रतिशत धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करनेवाले वयस्कों ने तम्बाकू की खरीददारी दुकान से की है। इकत्तीस प्रतिशत सिगरेट पीनेवाले, 39 प्रतिशत बीड़ी पीनेवाले और 32 प्रतिशत धूम्ररहित तम्बाकू का उपयोग करनेवाले वयस्कों ने तम्बाकू की खरीददारी गुमटी से की है, जिसमें सड़कों के किनारे की पान दुकानें भी शामिल है। उनसठ प्रतिशत सिगरेट पीनेवाले, मुख्यत: दो ब्राण्ड की सिगरेट खरीदना पसंद करते हैं तथा तीन-चौथाई (76%) सिगरेट पीनेवाले मुख्यत: पांच ब्राण्ड की सिगरेट खरीदना पसंद करते हैं, जबकि बीड़ी का सेवन करनेवालों मे केवल 20 प्रतिशत वयस्कों ने पांच प्रमुख ब्राण्ड की बीड़ी खरीदी है। सिगरेट पीनेवाला एक वयस्क औसतन ₹399.20 प्रतिमाह सिगरेट पर और एक बीड़ी पीनेवाला वयस्क औसतन ₹93.40 प्रतिमाह बीड़ी पर व्यय करता है। ग्रामीण क्षेत्रों (₹347.50)की अपेक्षा सिगरेट पर प्रतिमाह व्यय नगरी क्षेत्रों में (₹469.00) ज्यादा है, जबकि नगरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बीड़ी पर यह व्यय क्रमश: ₹92.50 और ₹98.00 कम है । भारत के विभिन्न राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में सिगरेट पर प्रतिमाह व्यय न्यूनतम झारखण्ड में ₹181.70 से लेकर अधिकतम अरुणाचल प्रदेश में ₹1264.90 है। यह व्यय बीड़ी पर न्यूनतम बिहार में ₹42.70 और अधिकतम राजस्थान में ₹147.80 है ।

मिडिया

सर्वेक्षण पूर्व 30 दिनों पहले की कालावधि में, आधे से थोडे अधिक (52%) वयस्कों ने सिगरेट विरोधी सूचना किसी ना किसी माध्यम से विभिन्न स्थानों पर देखी। सिगरेट विरोधी सूचना की अपेक्षा अधिकतर लोगों ने बीड़ी विरोधी (61%) और धूम्ररहित पदार्थ विरोधी (66%) सूचनाएं देखीं। विभिन्न तम्बाकू पदार्थ विरोधी सूचना देखनेवालों में राज्यस्तर पर व्यापक अंतर है। सिगरेट विरोधी सूचनांए देखनेवालो का प्रतिशत सबसे ज्यादा चण्डीगढ (91%) में तथा न्यूनतम बिहार में (36%) था। बीड़ी विरोधी सूचनाएं देखनेवालों का प्रतिशत अधिकतम (92%) चण्डीगढ में और न्यूनतम (31%) आसाम में था। धूम्ररहित पदार्थ विरोधी सूचनाएं देखनेवालों का प्रतिशत सबसे ज्यादा चण्डीगढ (93%) में तथा न्यूनतम पश्चिम बंगाल में (39%) था। अधिकतर सिगरेट पीनेवालों ने सिगरेट के डिब्बों पर (71%), बीड़ी पीनेवालों ने बीड़ी के बण्डलों पर (62%) तथा धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों का उपयोग करनेवाले (63%) लोगों ने तम्बाकू आवरण पर स्वास्थ्य चेतावनी देखी । अड़तीस प्रतिशत सिगरेट पीनेवाले, 29 प्रतिशत बीड़ी पीनेवाले तथा 34 प्रतिशत धूम्ररहित तम्बाकू का प्रयोग करनेवालों ने स्वास्थ्य चेतावनी

देखकर तम्बाकू छोड़ने के बारे में सोचा। सभी वयस्कों में से 28 प्रतिशत लोगों ने सिगरेट, 47 प्रतिशत लोगों ने बीड़ी और 55 प्रतिशत लोगों ने धूम्ररहित तम्बाकू पदार्थों का प्रचार-प्रसार देखा।

ज्ञान दृष्टिकोण और विचार

भारत के लगभग आधे (49%) वयस्कों को यह पता है कि धूम्रपान करने से लकवा होता है और लगभग दो-तिहाई से थोडे कम (64%) लोग जानते है कि धूम्रपान करने से दिल का दौरा पडता है, जबकि अधिकतर (85%) लोग यह जानते है कि धूम्रपान करने से फेफडों में कर्क रोग होता है। धूम्रपान करने से लकवा, दिल का दौरा तथा फेफड़ों में कर्क रोग होता है, यह जाननेवालों का प्रतिशत सबसे अधिक मिजोरम में (क्रमश: 79%, 92% व 98%) और सबसे कम अरुणाचल प्रदेश में (क्रमश: 34%, 37% व 78%) है।

अनुशंशा

तम्बाकू के अधिक प्रचलन के दृष्टिकोण से,भारत में राष्ट्रव्यापी प्रयास की आवश्यकता है ताकि तम्बाकू के प्रचलन को मुख्यत: अतिसंवेदशनशील वर्गों में, जैसे महिलाओं, युवकों और बच्चों में आगे बढ़ने से रोका जा सके। यह आवश्यक है कि कार्यक्रमों को इस प्रकार केन्द्रित किया जाए कि विभिन्न वयस्क जो तम्बाकू का भिन्न-भिन्न प्रकार से उपयोग करते है उन्हें तम्बाकू छोड़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। सिगरेट एण्ड अदर टोबॅको प्रोडक्ट ऐक्ट (सीओटीपीए, 2003) को राष्ट्रीय, राज्यस्तर और जिलास्तर पर प्रभावी रुप से लागू करने तथा उसे और मजबूत करने की आवश्यकता है। तम्बाकू नियंत्रण योजनाओं को राष्ट्रीय ग्रामीण सुरक्षा मिशन (एनआरएचएम) जैसे दुसरे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ जोड़ने की जरुरत है। तम्बाकू की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अलावा अन्य मंत्रालय जैसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा), वित्त, कृषि, श्रम, वाणिज्य, ग्रामीण विकास, सूचना एवं प्रसारण, महिलाएं एवं बाल विकास इत्यादि मंत्रालयों की अधिक भागीदारी की आवश्यकता है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अलावा पंचायती राज्य संस्थान, शिक्षण संस्थान, सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्था, सामाजिक समूह, मीडिया इत्यादि की भागीदारी की भी आवश्यकता है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) के अंत में राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम (एनटीसीपी), जिसकी शुरुवात 2007-08 में हुई थी, उसकी प्रगति के मूल्यांकन की आवश्यकता है तथा बारहवीं पंचवर्षीय योजना में एनटीसीपी का देश में व्यापक विस्तार करने की जरुरत है।